क्या प्रयोजन है ? इस अध्याय के अनुसार वेदाध्ययन का एकमात्र प्रयोजन श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानना है। अतएव कृष्णभावनाभावित पुरुष, अर्थात् भक्तियोगी को अपने-आप वेदों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है।

इस प्राकृत-जगत् के बन्धन को यहाँ आलंकारिक भाषा में पीपल का पेड़ कहा गया है। सकाम कर्मी के लिए इस का अन्त नहीं है। वह एक शाखा से दूसरी शाखा पर जाता है, दूसरी से तीसरी पर, तीसरी से चौथी पर और इस प्रकार निरन्तर भटकता ही रहता है। इस प्राकृत-जगत्रूप वृक्ष के विस्तार की कोई सीमा नहीं है; जो इसमें आसक्त है, उसकी मुक्ति नहीं हो सकती। आत्मोन्नति की ओर लक्षित वैदिक मन्त्र इस वृक्ष के पत्ते हैं। भगवान् ने इस वृक्ष की जड़ों को ऊपर बताया है, क्योंकि ये ब्रह्माजी के निवास सत्यलोक से निकलती हैं, जो इस ब्रह्माण्ड का सर्वोपरि लोक है। यह प्रपञ्च-वृक्ष प्रवाह रूप से नित्य है। जो इसे तत्त्व से जानता है, वह इससे छूट सकता है।

इस विमोचन की पद्धति को समझना आवश्यक है। पूर्ववर्ती अध्यायों में भव-बन्धन से मुक्ति के बहुत से साधनों का वर्णन है तथा तेरहवें अध्याय तक भगवद्भक्तियोग के साधन को सर्वोत्तम बताया गया है। भक्तियोग का प्रधान सिद्धान्त सांसारिक कर्मों से वैराग्य और भगवत्सेवा में अनुराग है। इस अध्याय के प्रारम्भ में उसी पद्धति का विवेचन है, जिसके द्वारा प्राकृत-जगत् की आसक्ति का सम्पूर्ण रूप से छेदन हो जाता है। संसार-रूप वृक्ष का मूल ऊपर की ओर हैं। भाव यह है कि यह सबसे ऊपर, सत्यलोक में महत्तत्त्व से निकला है। वहाँ से विभिन्न लोकरूपी शाखाओं में इस संसार-वृक्ष का विस्तार हुआ है। जीवों के कर्मफलरूपी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस वृक्ष के फल हैं।

इस संसार में हमें ऐसे किसी वृक्ष का अनुभव नहीं है, जो ऊपर मूल और नीचे शाखा वाला हो। इसका कुछ-कुछ आभास नदी-तट पर खड़े वृक्ष को देखने से हो सकता है। पेड़ की छाया जब जल में पड़ती है तो उसकी शाखायें नीचे और मूल ऊपर की ओर दिखती है। भाव यह है कि यह प्राकृत-जगत्रूप वृक्ष वैकुण्ठ-जगत् रूपी वास्तविक वृक्ष का प्रतिबिम्ब मात्र है। वैकुण्ठ-जगत् का यह प्रतिबिम्ब वासना पर ठहरा हुआ है. उसी भाँति जैसे वृक्ष की छाया का जल आधार है। वासना के कारण ही पदार्थ प्रतिबिम्बित प्राकृत प्रकाश में स्थित हैं। जो संसार-बन्धन से मुक्ति चाहता है, उसे इस वृक्ष को तात्त्विक अन्वेषण द्वारा सम्पूर्ण रूप से जानना चाहिये। तब, इससे अपने सम्बन्ध का छेदन किया जा सकता है।

वास्तविक वृक्ष का प्रतिबिम्ब होने से यह संसार-वृक्ष ठीक प्रतिरूप है। यहाँ जो कुछ है, वह सब वैकुण्ठ-जगत् में भी है। निर्विशेषवादियों के सांख्य दर्शन के अनुसार, ब्रह्माजी इस संसार-वृक्ष के मूल हैं और उस मूल से ही क्रमशः प्रकृति, पुरुष, त्रिगुण, पंच महाभूत, दस इन्द्रियों और मन आदि होते हैं। इस प्रकार वे सम्पूर्ण जगत् का भिन्न-भिन्न तत्त्वों में वर्गीकरण करते हैं। यदि ब्रह्मा को सम्पूर्ण सृष्टि का केन्द्र